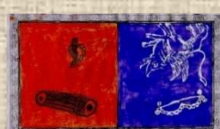
ISBN Number: 978-93-342-0225-0 (Book)
ISSN 2229-547X (online)

विदेह ४१० म अंक १५ जनवरी २०२५ (वर्ष १८ मास २०५ अंक ४१०)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 410 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अनक्रुम

ऐ अंकमे अछि:-



१.अंक ४०९ पर टिप्पणी

डा. धनाकर ठाकुर

'गुरूत्वाकर्षण' डा संस्कृति मिश्रा क नामक विपरीत एक अपसंस्कृतिक कृत्रिम कथा अछि जकर शीर्षक' 'गुर्वाकर्षण' होयबाक छल वा अधिक सटीक 'शिक्षकार्षण' शिक्षा क नव रूपमे गुरुक अवमूल्यन भय चुकल अछि आओर ओ शिक्षकहूँ नहि सहयोगी रहि गेल अछि।

एक आई आई टीयनक बैंक मे नौकरी सेहो ऊंच पद पर नहि कारण दूकमरहिक मकान भेटल ओ आगन्तुक शिक्षाक लेस गेस्ट हाउस नहि त होटलहूं नहि अपनहि डेरा जेना कामातुरा लेल मौका जे हूनकहि दिशि सं दवाई छूटक बहाना लिखनाइ सत्य रहैत। कथाक पूर्णता भय जाइत यदि गुरुमाय अपन पोल खोलैत ओहि शिक्षकक अपन ओकर छात्रावस्थाक प्रेम प्रसंग पर प्रकाश दैत "यतिसौतिन" दूनू भय जइतथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गद्य

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-२

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'- जय गोड़ैया बाबा!

२.३.परमानन्द लाल कर्ण-श्रीविष्णुजीक माहात्म्य

२.४.लाल देव कामत-ड्राईंग रूम मे लाफिंग बुद्धा कतेक लाफिंग कतेक थिंकिन? / बिहैन कथा -: वियाह गीतक दियेमान

२.५.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- यथावत

२.६.आचार्य रामानंद मंडल-शुभांगी

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-२



कल्पना झा

मथिली साहित्यम उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एव हुनक परिवारक योगदान-२

नानीक हठ : उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' लले वरदान

हरिपुर 'बख्शी' टोल निवासी एकटा अत्यन्त निर्धन दंपतिक पाँच-छओ टा

संतान लगातार जन्मक उपरान्त मृत्यु प्राप्त करैत गेलनि। अन्ततः कुल तेरह गोट संतान मे सँ मात्र दूटा पुत्र देवता-पितरक कृपा आ जोग-टोनक बदौलति कहुना बचलाह आ कि कबुला-पातीक बदौलति बचाओल गेलाह, भगवान जानथि। जे-से.....ओहि दंपतिक ज्येष्ठ बालक जखन पाँच बरखक भेलाह, तखन अक्षरारम्भ संस्कार पिताक हाथेँ कराओल गेलनि। गाम मे एकटा छोटछीन लोअर प्राइमरी स्कूल छलैक। ओही प्राइमरी स्कूल मे प्राथमिक शिक्षाक लेल जाए लगलाह ओ बालक। तदुपरान्त गाम सँ एक किलोमीटर दूरी पर अवस्थित अपर प्रइमरी स्कूल, कलुआही मे शिक्षा ग्रहण कएलनि ओ बालक। जेहने देखैत सुन्दर, भगवानक देल भव्य मुख-मण्डल, तेहने प्रतिभाशाली। संस्कृत, गणित, भूगोल, सभ विषय मे हिनक प्रतिभाक लोहा मानल जाए लागल, विद्यालय मे। बस अंग्रेजी कनि कमजोर रहनि । मिडिल स्कूल मे, जिला भरि मे छठम स्थान प्राप्त कएलनि।

मुदा मेधावी रहने की होइतनि। पिता लग बालक केँ आगाँ पढ़एबाक उपाए नहि छलनि। पढ़ाएब तँ बादक बात, भरि पेट भोजनक व्यवस्था करब सेहो पिताक लेल दुष्कर भऽ रहल छलनि। पिताक विपन्नता...पूजा पाठ मे लीन रहब, ओहि बालकक भविष्य केँ गर्त मे डुबा देबाक संयोग बना रहल छलए। मुदा भावी प्रबल होइछ। से सत्ते !

"जकरा प्रारब्ध मे जे रहैत छैक से भेटितहि छैक" एहि बातक प्रमाण अछि हरिपुर 'बख्शी' टोल मे जनमल एहि नेनाक जीवन। केओ ने केओ माध्यम बनि जाइत छैक आ क्षणहि मे सभ किछु कोना बदलि जाइत छैक, तकर प्रमाण सेहो अछि एहि नेनाक जीवन-यात्रा। आ से माध्यम बनलथिन एहि नेनाक नानी।

बनैली राज जकरा गढ़बनैली राजक नाम सँ सेहो जानल जाइत अछि।

बिहार राज्यक पूर्णियाँ जिला मे स्थित एकटा जमींदारी एस्टेट छलए। बनैली एस्टेटक स्वामित्व ब्राह्मणे सभ लग छलनि। ओ सभ मिथिला क्षेत्रक शासक राजवंशहि कैँ मानल जाइत छलाह। एस्टेटक नाम तत्कालीन पूर्णियाँ जिलाक एकटा गाम 'बनैली' सँ संबद्ध अछि प्रायः। भऽ सकैत अछि ओहिठामक राजमहलक निर्माण मे अधिकांश राजमिस्त्री आ मजदूर बनैली गामक रहल होइक किंवा ओहिठाम राखल गेल अन्य कर्मचारी (जेना-भनसिया, माली वा अन्य सफाई कर्मचारी) मे सँ बेसी संख्या बनैली गाम सँ आएल होइथ। जे-से।

गढ़बनैली राजक एकटा भनसियाक टीम हरिपुर 'बख्शी' टोल आएल छलए। कोन अवसर पर आएल छलथि ई भनसिया सभ, से स्पष्ट जनतब नहि भेटि सकल हमरा। बस एतबा बूझल अछि जे ओही भनसिया सभक संग ओ विपन्न पिता, अपन विपन्नता सँ मुक्त करबाक उद्देश्य सँ अपन 'करेजक टुकड़ी' अपन बालक कैँ गढ़बनैली राजक एस्टेट पठएबाक निर्णय लऽ लेने छलाह। एकदम फाइनल डिसीजन। कारण गाम पर जमीन-जथा अत्यल्पे सन रहने खेबा-पीबाक असौकर्य बला स्थिति छलनि। पिताक मोन मे अएलनि, एही भनसिया सभक संग टहल करबालेल, संग लगा दैत छी बच्चा कैँ। बर्तन-बासन माँजि लेल करत आ तकर परिणाम स्वरूप दुनू साँझ भरि पेट खाए लेल भेटि जेतैक बच्चा कैँ। एहिठाम तँ एहन स्थिति, जे आइ खाएत, काल्हि की बनतैक तकर ठेकान नहि। एकटा पिता कैँ एहन निर्णय लेबालेल अपन करेज कैँ पाथर बना लेबा मे केहन पीड़ा भेल हेतनि से बूझल जा सकैछ। आ इएह कारण रहल होएत, जे पिताक प्रति सम्मान राखैत ओ बालक आजीवन एहि भनसिया बला प्रकरण केर चर्चा कत्तहु नहि कएलनि।

बेस ! निश्चित भेल जे ओ बच्चा भनसिया सभक संग गढ़बनैली राज लेल

प्रस्थान करताह। माए कानैत-खिजैत, नोर पोछैत, जएह किछु कपड़ा-लत्ता छलनि बच्चाक, तकर मोटरी बान्हए लगलीह। ई दृश्य देखि बालकक नानी, जे बख्शीए टोल मे रहैत छलीह, पेटकान लाधि देलनि। "बच्चा एत्तहि रहताह, हमर बच्चा आगाँ पढ़ताह, ओ बर्तन-बासन नहि मजताह" एहि सभ माँगक संग अट्ठा-बज्जर खसा देलथिन। एहि बच्चाक नानी आ बड़ी राजमाता, समवयस्क। राजमाता साहिबाक प्रपितामह आ हिनकर नानीक पितामह सहोदर... यैह सम्बन्ध रहइक। दुनू बाल्यकालहि सँ संगी। दुनूक बीच "बहिना" लागल छलनि। आब बेटी जमाए लग कोनो उपाए नहि छलनि। जाहि बच्चा कैँ भोरे भनसिया सभक संग गढ़बनैली राज जेबाक छलनि, से भोरे विदा भेलाह दरभंगा राजदरबार लेल। वास्तव मे "भावी" कतेक बड़ प्रबल होइछ, ओह....बेर बेर मोन मे आबि रहलए।

नानी सिखा कऽ विदा कएलथिन दरभंगा लेल, जे राजमाता सँ भेंट कऽ कहबनि,"हम हुनकर नाति छी; हमरा आगाँ पढ़बाक अछि।" बेस ! राजमाता सँ मददि केर आस लऽ बच्चा 'बख्शी' टोल सँ दरभंगा लेल प्रस्थान कएलनि। किछु गौँआक संग। पैरे-पैरे। एक भोर विदा भेलाह गाम सँ, से मुन्हारि साँझ भऽ गेलनि दरभंगा पहुँचैत। राति कऽ केओ राजदरबार मे प्रवेश करए देत कि नहि, से सोचि एकटा मन्दिर मे शरण लेलनि। मन्दिरक लगीच एकटा पोखरि देखि, भूख-प्यास सँ लोहछल ओ बच्चा, ओतहि हाथ-पैर धोलनि आ चुरुके-चुरुके कनि पानि पीबि अपन तृष्णा मेटओलनि। पानि पीबि मन्दिरक ओसारा धरि अबितहि मुर्छित भऽ गेलाह। भरि दिनक थकान सुकुमार बच्चा कैँ बेहोश कऽ देलकनि। लोक सभ पानि छीटैत गेलाह। होश मे अएलाह, तखन नाम - गाम पुछलथिन मन्दिरक पुजारी। कहलथिन , " हम पंडित विश्वनाथ झाक बालक उपेन्द्र थिकहुँ।" संयोग वश ओहि मन्दिरक, ओ पुजारी 'बख्शी'ए टोलक मूल निवासी छलाह। राति ओतहि विश्राम कएलनि। प्रातः काल पुजारी जी कैँ

कहलथिन, "बड़ी राजमाता सँ भेंट करबाक अछि हमरा।"

संयोग कोना-कोना बनैत गेलनि, से ध्यान देबाक बात अछि। राजदरबारक कोनो कर्मचारी सँ मन्दिरक पुजारी कैँ परिचय छलनि। ओ राजमाता धरि ई सूचना पहुँचबा देलथिन, जे हरिपुर 'बख्शी' टोल सँ एकटा बालक अहाँ सँ भेंट करबाक इच्छाक संग एहिठाम आएल छथि। राजमाताक आज्ञा भेलनि, आ बालक उपेन्द्र हुनका सोझाँ उपस्थित भेलाह। नानीक सिखाएल बात कहलथिन। राजमाताक हृदय ममता सँ भरि गेलनि, पुछलथिन "किछु खएलहुँ अछि भोर सँ ?"
बालक उपेन्द्र चुप्प! किछु नहि बजलाह। राजमाता कैँ बुझबा मे आबि गेलनि, बच्चा भूखल अछि। राजमाताक आदेश पर भरि थारी पूड़ी-पकवान-मधुर आनल गेल बालकक सोझाँ। ओ "भूख" आ ओ "आतिथ्य" कहियो नहि बिसरलाह उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'।

अस्तु ! राजमाताक आदेश सँ राजनगरक हाइस्कूल मे नामांकन कराओल गेलनि बालक उपेन्द्रक। दया बाबूक सहयोग सँ राजमाता साहिबा सँ नियमित प्रतिमास पाँच रु.क छात्रवृत्ति प्राप्त होमए लगलनि। एहि तरहेँ आगाँ शिक्षा ग्रहण करबाक बाट प्रशस्त भेलनि। इंजीनियरिंग कॉलेज धरि पहुँचैत, समय-समय पर अनेक उदारमना गणमान्यक सहयोग भेटैत रहलनि।

ई घटना, माने नानीक हठ बालक उपेन्द्रक जीवन कैँ दिशे बदलि देलकनि। हुनका लेल वरदान सिद्ध भेलनि नानीक हठ। एहि घटना सँ हमरा आजुक महिला सशक्तिकरणक नारा लगओनिहारि, आन्दोलनी महिला सभ पर 'दयाभाव' आबैत अछि। महिला, सभ दिन सँ सशक्त रहल छथि, एहिलेल कोनो नारेबाजी, कोनो आन्दोलनक बेगरता नहि छैक। अपन स्वभाव सँ

केओ सशक्त वा अशक्त होइत अछि। चाहे ओ पुरुष होइथ कि महिला। हमर एहन सोचब अछि।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'- जय गोड़ैया बाबा!



प्रमोद झा 'गोकुल'

जय गोड़ैया बाबा !

राति तकरीबन दसेक होइत हेतै। जाड़ ते बूझहू बीच बजार मे केहनो केहनो हठ्ठा कठ्ठाके बजारैले टाल ठोकि रहल छलै ,आ तैपरसे पछवाक हल्फी जेना आर सिरसिराके राखि देलकै । सब अपन अपन घर मे रजाइ आ कम्बल तर निसबद भेल अपन दुनू हाथके दुनू जाँघक बीचमे दाबि घोकड़ियाके सूतल छल। जकरा कपड़ा लत्ता आ बिछौनाक अभाव छलै से उठि उठि के आगि धधका धधका के बाले बच्चे सबहु परानी कहुनाके राति कटैले बिवस छल । कि तखने लगेमे खुटेसल गाय खूब जोर जोर से हुकरय लगलै, से सुनिके बलचनमा ताज्जुब मे पड़ि गेल। यैहतै लगभग महिना दिन भेलैए जे ई पाल खेनै रहै तहन फेर आइ एना डिड़िया किए रहल छै? पजड़ा सटिके बैसलि धन्नो तैपर माथ पिटैत कहलकै -ई आँखिसे पाल खाइत देखने छलै से?

-मर बैँहिं ,आंँखिक सोझाँमे सेन्टर पर कम्पोटरा सीमेनक सुइ लगौने छलै,तखन एना किए भेलै से गोड़ैया बाबा जानैथ।हमराते खूब खियाल ऐछ जे मास दिन पहिने..

- धौर, पैहले लग जाके देखौगे ने जे ढरैक उरैक गेलैये कि बेसी जाड़ ठाड़ छै तेँ एना डिरियाय छै!
- हँ सेहो ई बेस कहै छै! देखै छियै सहटिके जाके। सिरहाना तर से चौरबत्ती लबौते तनी!
- लौ, नीक नहैंत तजबीज क'के देख अबौ!
दुनू ठेहून पर हाथ रखैत बलचन उठल आ अडैठीमोर करैत बाजल -हौ बाबा रछछा करह हौ! गरीबक गोहारि एक तोहीं ..एतबा कहैत ओ टगय लागल कि धन्नो झटसिन उठिके अपन बांहिंक सहारा दैत कहलकै -होसमे अबौ फुलिया बाबू! कहूंँ आगि लग किओ एना अडैठीमोर करय?
- त... जँ आइ ई लगमे नै रहितैते तेसरे बात भ' जैतै!
- शुभ शुभ बोलौ आ जाउ देख अबौ लछमीके! डिरियाय ते तहिना छै फेनोसे ओहा गेलैए!
- इहो अनट बनट जुनि बोलौ! जँ से भेलै ते बुझौ अनरथ भ' जेतै। अच्छे ... ते इहो जरे चलौ ने!
-हम जाके की करबै?
- जनी जातिक बात ते ई हमरासे अबस्से बेसी बुझहैत हेतै!
- मनुखक बात किछ आर होइ छै
-आर की हेतै? तकरीवन सब बात एके रङ होइ छै। अंतर एतबे जे मनुखक मुहँमे बोल आ दिमागमे अकल होइछै।
-बेस ते चलौ देव पितरक गोहारि क'के ।
दुनू बेकती गाय घर गेल आ टार्चक रोशनीमे नाडैर उठाके देखलकते हाकरोस करैत बाजल - जुलुम भ' गेलौ गै धन्नो! आशा पर बरफ जमा

देलकै दैवा!!

-घौना जुनि करौ आ बोलौ की भेलै?

- फेनो से ओहा गेल छै गाय,सैह।

-ऐ मे एकर कोन साध छै! मोनके थीर क'के चलौ घूरा तर।सुतली रातिमे एकर कोनो उपाइयो ते नै छै? हँ एतबा धैर कहि दै छियै जे ऐबिरदा सेन्टर पर नै जा के कोनो निम्मन जातिक देसी सरहा से पाल खुवौतै!

से कत' भेटतै ऐ गाम मे?

- किए, बिचला टोला मे भाला बाबूक ओइ जग नीक जातिक बड्ड निम्मन सरहा छै।

-आँइ...

- हँ पचास रुपैये खेप लै छथीन निस्तुकी गैरेन्टीक संग।

- भने ई कहि देलकै।आब बउवाइयो नै पड़त। काइल्हि अहलभोरे तखन हुनके दूरा पर गाय ल' के पहुँच जेबै।जय गोड़ैया बाबा! ऐ बिरदा गरीवक आहार नै छिनिहह।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.परमानन्द लाल कर्ण-श्रीविष्णुजीक माहात्म्य

परमानन्द लाल कण ि

श्रीविष्णज्ुीक माहात्म्य



শ্রীরিষ্ণুজীক মাহাম্ব্যে

(পদ্মপ্পবাণ উঁত্ত্ব খণ্ড)

শ্রীপার্রতী জী মহাদের জী সঁ কহলথিন - প্রভো ! ভগরন ! শ্রীরিষ্ণুজীক মহাম্ব্যে খদ্ভুত খছি , জেকবা স্বনি নোকনি সঁসাব রঁন্ধন মে নহি খারেঁত ছথি , সে খহাঁ হমবা স্বনাউঁ ।

মহাদের জী কহলনি - হম ভগরান শ্রীরিষ্ণুজীক উঁত্ত্ম মাহাম্ব্যেক রর্ণন কবৈত ছী , স্বন্ন; ঞা স্বনি নোকনি প্পণা পারি মোঞ্চ পারি নৈত খছি । মহাপ্রাজ্ঞ দেরব্রত, জে ঔঁদ্র খাদি দেরক নেন সেহো দ্বর্ধর্ষ ছলাহ, ক্ষকক্ষেত্রক প্পণা ভমি মে ধ্যানযোগ পবাযণ ভহ বহন ছলাহ, ও সর শাস্ত্রক খাশ্রয ছলাহ । ও খপনা ঔঁদ্রী কেব রস মে কহ নেনে ছলাহ । হ্মনকা মে পাপক নেশ সেহো নহি ছন । ও সহপ্রতিজ্ঞ ছলথি খা ক্রোধ কেঁ জীত সমতা মে প্রতিষ্ঠিত ভহ চুকন ছলাহ । সঁসাবক স্বামী খা সরহক ভওরস্েন ভগরান নাবাযণ মে মন,রাণী,শবীব খা ক্রিযা সঁ পবম নিষ্ঠ ছলথি । এহন শান্তচিত্ত খা সর গ্বণক খাশ্রয ভত ক্ষক-পিতামহ ভীষ্ম কেঁ মাথ ঝুকা কহ বাজা যধিষ্ঠিব নমন কহ প্ছলখিন ।

যধিষ্ঠিব কহলনি - সর শাস্ত্রক জ্ঞাতা মে শ্রেষ্ঠ , ধর্মক জ্ঞাতা পিতামহ ! কেও ধর্ম কেঁ শ্রেষ্ঠ কহৈত ছথিন তহ কেও ধন কেঁ । কেও দানক প্রশঁসা কবৈত ছথিন তহ কেও সঁগ্রহক গীত গারেঁত ছথিন । কিছু নোকনি সাঁখাক সমর্থক ছথিন তহ কিছু যোগক । কেও যথার্থ জ্ঞান কেঁ উঁত্ত্ম মানৈত ছথিন তহ কেও রৈবাগ্য কেঁ । কিছু নোকনি খগ্নিষ্ঠোম খাদি কেঁ সরসঁ শ্রেষ্ঠ মানৈত ছথিন তহ কেও খাম্বেজ্ঞান কেঁ পৈঘ মানৈত ছথিন , জাহি সঁ হ্মনকা নেন মাটি, পাথব খা সোনা একহি বঁগ প্রতীত হোযত ছৈন । কিছু নোকনি মনিষী নোকনি সঁ রতাওন গেন যম খা নিযম কেঁ উঁত্ত্ম মানৈত ছথিন । কেও দযা কেঁ শ্রেষ্ঠ রতারেঁত ছথিন তহ কিছু মহাম্বো খহিঁসা কেঁ সর্রোত্ত্ম কহৈত ছথিন । কেও শৌচাচাব কেঁ শ্রেষ্ঠ কহৈত ছথিন তহ কেও দেরার্চন কেঁ । এহি সঁ পাপ কর্ম সঁ মোহিত নোকনি চকবা জাওত খছি ,খা কোনো নির্ণয নহি কহ পারেঁত ছথিন । এহি সর মে জে সরসঁ নীক গ্রহ কোন খছি ,জেকবা মহাম্বো নোকনি সেহো খন্বষ্ঠান কহ সকথি , সে রতার'ক গ্রপা কক ।

ভীষ্ম জী কহলনি - ধর্মনন্দন ! স্বন্ন , ঞা গ্বঢ রিষয খছি , জে সঁসাব রঁন্ধন সঁ ম্বক্তি দৈত খছি । ঞা খহাঁ কেঁ স্বন'ক খা জান'ক চাহী । প্পওবীক নাম সঁ একটা পবম ব্রুদ্ধিমান খা রেদ রিত্তা সঁপন্ন ব্রাহ্মন ছলাহ , জে ব্রঁবহ্মচর্য খাশ্রম মে নিরাস কবৈত সদিখন গ্বরুক খাজ্ঞাক পানন কবৈত ছলাহ । ও জিতেঁদ্রিয , ক্রোধজযী , সঁধ্যোপাসনা মে বত , রেদ-রেদাঁগ মে নিপ্পণ খা শাস্ত্রক ব্যাখ্যা মে

क्षीण भेलाह । साँझ आ भोर मे होम करैत छलाह । ओ भगवान विष्णुक ध्यान कए विधिविधान सँ हुनक आराधना करैत छलाह । तप आ स्वाध्याय मे रत ओ साक्षात ब्रह्माजीक पुत्र सन लगैत छलाह । पानि,फूल,पात आ समिधा जंगल सँ आनि सदिखन गुरुक पूजा मे लागल रहैत छलाह । हुनका मन मे माय-बाबूजीक प्रति सेहो सेवाक भाव छल । ओ भिक्षाटन करैत दंभ द्वेष सँ दूर ब्रह्मविद्याक स्वाध्याय करैत प्राणायामक अभ्यास मे रत रहैत छलाह । हुनका हृदय मे सबहक प्रति आत्मभाव छल । एक बेरि हुनका मन मे संसार सागर सँ तारए वाला विचार उत्पन्न भेलनि;तरुण ओ माय - बाबूजी ,भाइ , दोस्त, सखा-संबंधी, बंधु-बांधव,वंश-परंपरा ,धन-धान्य सँ परिपूर्ण घर ,खेत खलिहान त्यागि परम खुशी भए पैदल-पैदल पृथ्वी पर विचरण करए लगलाह । ओ पुरालोक मार्ग सँ यथासंभव सब तीर्थ मे विचरण करए लगलाह ।

पूर्व कर्मक प्रभाव सँ एक दिन महायोगी पुण्डरीक घुमैत घुमैत शालग्राम तीर्थ पहुँच गेलाह, जहि ठाम तपस्वी आ मुनि लोकनि रहैत छलाह । एहि क्षेत्र मे सरस्वती नदी मे नहाय सोनाय कए दोसर-दोसर तीर्थ घुमए लगलाह । तीर्थाटन सँ हुनक अन्तःकरण शुद्ध भए गेल छल । तकर बाद ओहि ठाम ओ अपन आश्रम बना लेलनि । आश्रम मे रहि शास्त्रोक्त विधि विधान आ भक्ति भाव सँ भगवान गरूड़ध्वजक आराधना कए ओ सिद्धि पाबैक लेल शब्द-गरम आदि सँ रहित जितेंद्री भए शाक,कन्द व फलक आहार लए अकेले निरास करैत छलाह । ओ सदि खन संतुष्ट रहैत सबकेँ एक दृष्टि सँ देखैत छलाह । यम ,नियम,आसन,प्राणायाम ,प्रत्याहार. धारणा ,ध्यान आ समाधि सँ आलस्य रहित भए सदिखन विधि-विधान सँ योगाभ्यास करैत छलाह । हुनक सब पाप कटि गेल छल । ओ वैदिक ,तान्त्रिक आ पौराणिक मन्त्र सँ सर्वेश्वर भगवान विष्णुक आराधना करैत छलाह । राग-द्वेष सँ मुक्त भए मूर्तिमान सुधर्म जकाँ निरन्तर भगवान मे मन लगा कए हुनक आराधना करैत चलाह ।

एक समयक रात अछि परमार्थ तत्त्वक ज्ञाता साक्षात सूर्य सन महातेजस्वी ,विष्णु-भक्ति सँ परिपूर्ण आ वैष्णवक हितैषी देवर्षि नारदजी तपोनिधि पुण्डरीक केँ देखए लेल ओहि ठाम एलाह। नारदजी केँ देखि पुण्डरीक प्रसन्नचित्त भए हुनका नमन केलखिन । तत्पश्चात विधि विधान सँ निवेदन कए माथ झुका कए नमन केलखिन । मने मन ओ सोचैत छलाह जे ई अद्भुत आकार आ मनोहर वेष धारी पुरुष के थिकाह ? हिनका हाथ मे वीणा छैन आ मुख पर प्रसन्नताक छाप अछि । ई सोचैत ओ नारद जी सँ कहलनि - महाभूते ! अहाँ के छी ? आ कोन ठाम सँ एहि आश्रम पर आयल छी ? भगवन ! एहि पृथ्वी पर अपनेक दर्शन तए दुर्लभ अछि । हमरा लेल जे आज्ञा हो से बताउ ।

नारद जी कहलनि - ब्रह्मण ! हम नारद छी । हम अपनेक दर्शनक उत्कंठा सँ एहि ठाम आयल छी । द्विजश्रेष्ठ ! जौं भगवानक भक्त चाण्डाल होयत तैयो ओ स्मरण,वार्तचीत व पूजा केला पर सबकेँ पवित्र कए दैत छथिन । जिनका हाथ मे शार्ङ्ग नाम सँ धनुष,पाञ्चजन्य शँख ,सुदर्शन चक्र आ कौमोदकी गदा धारण केने त्रिभुवनक नेत्र छथि ,ताहि देवाधिदेव भगवानक हम दास छी ।

पुण्डरीक कहलनि - देवर्षी ! अपनेक दर्शन सँ हम देहधारी लोकनि मे धन्य भए गेलहुँ । हमर

মায-ব্ঁাব্ঁুজী প্রতার্থ ভহ় গেনথি শ্বা হেম এহি জন্মক ফন পারি নেনহুঁ । নাবদ জী ! হেম শ্বপনেক ভক্ত ছী , হেমবা পব প্রপা কক । হেমবা পবম গুঢ বহস্য সঁ ভবন কর্তর্রাক উঁপদেশী দিশ্ব ।

নাবদ জী কহ়নেনি - ব্ঁবহ্মণ ! এহি পৃথ্বী পব কতেকো শাস্ত্র , কর্ম শ্বা ধর্ম শ্বছি তেঁ সঁসাব মে এহেন রিনক্ষণতা দেখি বহন ছী, নহি তহ় সর জীর কেঁ স্বখহি স্বখ শ্বথরা দ্বখহি দ্বখ হোযতে । কিছু নোকনিকক কহর ছৈন জে ঞা সঁসাব ক্ষণিক, রিজ্ঞানমাত্র , চেতন শ্বাত্মো সঁ বহিত শ্বা ব্ঁাহবী পদার্থক শ্বপেক্ষা শূন্য শ্বছি । কিছু নোকনিকক কহর শ্বছি জে ঞা সঁসাব নিহ শ্বরাঞ সঁ উঁপ্নেন্ন ভেন শ্বছি শ্বা এহি মে সমা জাযত শ্বছি । কিছু নোকনি তত্ত্বরক রিচাব মে প্ররৃত্ত ভহ় ঞা নিশ্চয কবৈত ছথি জে শ্বাত্মো শ্বনেক .নিহ শ্বা সর্রগত শ্বছি তহ় কিছু নোকনি এহি নিশ্চয পব পহুঁচনাহ শ্বছি জে জতেক শবীব শ্বছি ততেক শ্বাত্মো শ্বছি । কিছু নোকনিকক কথন শ্বছি জে শ্বাঞা জেহেন সঁসাব শ্বছি তেহনে শ্বাগ্ন সেহো বহত । কিছু নোকনি সঁসাব কেঁ ঞশ্বৰক সত্তা সঁ বহিত ব্ঁুন্নৈত ছথিন তহ় কিছু নোকনি ঞশ্বব কেঁ র্যাপক মানৈত ছথিন । এহি প্রকাব সর শ্বপনা-শ্বপনা মত সঁ শ্বনগ-শ্বনগ রিচাব দৈত ছথিন ।

হে তপস্বী ! শ্বার হেম শ্বহাঁ কেঁ তর্ক মুক্ত রাস্তরিক ব্ঁাত কহৈত ছী । ঞা পবমার্থ জ্ঞান পবম প্বণামঘ শ্বা সঁসাব ব্ঁন্ধন কেব মুক্ত কবহ় রানা শ্বছি । শ্বজ্ঞান সঁ মোহিত নোকনি হূত,ভরিষ্য শ্বা দূবরর্তী রস্তু কেঁ প্রমাণ কপ মে স্বীকাব নহি কবৈত ছথি । হ্মনকা নেন প্রত্যক্ষ রস্তুক প্রামাণিকতা স্বীকার্য শ্বছি । মুদা মুনি নোকনি প্রত্যক্ষ শ্বা শ্বনুমানক শ্বতিবিক্ত পূর্র পবম্পবা সঁ এক হি কপ মে শ্বারৈত সর রস্তু কেঁ প্রমাণক কপ্ মে স্বীকাব কবৈত ছথি । রাস্তর মে এহেন রস্তু কেঁ সাধন মে প্রমাণ মান'ক চাহী , জেকবা শ্বভ্যাসক রন সঁ বাগ-দ্বেষ কপী মনক নাশ ভহ় জাযত শ্বছি শ্বা উঁত্তম জ্ঞানক প্রাপ্তী হোযত শ্বছি । জে কর্ম শ্বা ফনকপ প্রসিদ্ধ শ্বছি ,জিনকব তত্ত্বর রিজ্ঞান শ্বা দর্শন নাম ধাবণ কবৈত শ্বছি,জে শ্বাত্মেসঁরেদন কপ,নিহ, সনাতন, ঈঁদ্রিযাতীত,চিন্ময,শ্বমৃত,জ্ঞেয ,শ্বনন্ত , শ্বজন্মা, শ্বরিকাবী, রাঞ শ্বা শ্বরাঞ কপ মে স্থিত ,নিবঁজন ,সর্রর্যাপী শ্রীরিষ্ণু নাম সঁ রিখ্যাত শ্বা রাণী রর্ণিত সর রস্তু মে শ্বনগ-শ্বনগ কপ মে মানন গেন শ্বছি । পবমার্থ সঁ রিমুখ নোকনি কেঁ হ্মনকব জ্ঞান ভেনাঞা শ্বসঁভর শ্বছি । হে প্বণ্ডবীক ! পূর্র কান মে ব্ঁবহ্মাজী হেমবা প্বছনা পব জাহি তত্ত্বরক উঁপদেশী দেনে ছনাহ সে হেম শ্বহাঁ কেঁ ব্ঁতা বহন ছী । এক সময শ্বজ, শ্বরিনাশী পিতামহ ব্ঁবহ্মাজী ব্ঁবহ্মনোক মে রিবাজমান ছনাহ । তখন হেম রিধি রিধান সঁ গোব নাগি প্বছনে ছনহুঁ জে ব্ঁবহ্মণ ! কোন জ্ঞান সর্রোত্তম শ্বছি ? কোন যোগ সর্রশ্রেষ্ঠ মানন গেন শ্বছি? ঞা সর যথার্থ কপ সঁ হেমবা রতাউঁ ।

ব্ঁবহ্মাজী কহনেনি - হে তাত ! সারধানীপূর্রক শ্বহাঁ পবম উঁত্তম জ্ঞান যোগক শ্রেরণ কক । কম রাকা মে কহন গেন একব শ্বর্থ ব্ঁড় রিস্তৃত শ্বছি । একব উঁপাসনা মে কোনো ক্লেশী র পবিশ্রম নহি শ্বছি । জিনকা গ্বক পবম্পবা সঁ পঞ্চরিষযক প্বকষ কহন গেন শ্বছি ,রএহ সর হূতক শ্বাত্মো ছথি তেঁ হ্মনকা সমস্ত জগতক নিরাস কপ সনাতন পবমাত্মো নাবাযণ কহন জাযত শ্বছি । রএহ সঁসাবক সৃষ্টি,সঁহাব শ্বা পানন মে নাগন বহৈত শ্বছি । ব্ঁবহ্মা , রিষ্ণু শ্বা শির - ঞা তীন্ন কপ মে একহি দেরাধিদের সনাতন প্বকষ রিবাজমান ছথি । শ্বপন হিতক ভচ্ছা ধাবী প্বকষ কেঁ সদি খন হ্মনক শ্বাবাধনা কব'ক চাহী । জে নিঃস্পৃহ, নিহ সঁতুষ্ট , জ্ঞানী ,জিতেঁদ্রিয,মমতা -শ্বহঁকাব সঁ

বহিত, বাগ দ্বেষ সঁ শূন্য ,শান্তচিত্ত আ সব প্রকাবক আসক্তি সঁ পৃথক ভঽ ধ্যান যোগ মে প্রবৃত বহৈত ছথি,রএহ অক্ষয় জগদীশ্বব কেঁ দেখি সকৈত ছথি । জে ভগরান নাবাযণক শবণ মে জা চুকন ছথি , রএহ জ্ঞান দৃষ্টি সঁ সংসাবক রর্তমান , হৃত, ভরিষ্য,স্থূল ,সূক্ষ্ম আ দোসব জ্ঞাতরা রাঁত কেঁ যথার্থ কপ সঁ দেখি পারৈত ছথি । একব রিপবীত জিনকব বুঁদ্ধি মন্দ আ অন্তঃকবণ দূষিত অছি র জিনকব স্বভার কুতর্ক আ অজ্ঞান সঁ দুষ্ট ভঽ বহল অছি , এহন লোকনি কেঁ সব কিছু উলৃটা প্রতীত হোযত অছি ।

নাবদ জী কহলনি - পৃথ্বীক ! আব হম দোসব প্রসঁগ স্বনরৈত ছী, সেহো স্বনু । পূর্রকাল মে জগতপিতা ব্রঁহ্মা জী ভাহো উঁপদেশ দেনে ছলাহ । এক রেঁবি ইঁন্দ্র আদি সব দের আ ঋষিলোকনি কেঁ পুছলা পব উঁত্তম ব্রতক পালক ব্রঁহ্মা জী হ্মনক হিতক রাঁত এনা রঁতেনে ছলাহ ।

ব্রঁহ্মা জী কহলনি - হে দেরগণ ! ভগরান নাবাযণ সরহক আশ্রয ছথি । সনাতন লোক,যজ্ঞ আ কতেকো প্রকাবক শাস্ত্রক পর্যরাসন নাবাযণ মে হোযত অছি । ছও অঁগ সহিত রেদ আ দোসব আগম সর্ররযাপী রিশ্বেশ্বব শ্রী হবিক স্বকপ অছি । পৃথ্বী আদি পাঁচো হৃত সেহো রএহ অরিনাশী পবমেশ্বব ছথি । দেরগণ সহিত সমস্ত জগত কেঁ শ্রীরিষ্ণুময বুঁঝক চাহী , মুদা পাপী মানুষ মোহগ্রস্ত ভেলাক কাবণ এহি রাঁত কেঁ নহি বুঁঝৈত ছথিন । ঞা সমস্ত চবাচব জগত হ্মনকহি মাযা সঁ রযাপ্ত অছি । জে মন সঁ ভগরানক চিন্তন কবৈত ছথি, জিনকব প্রাণ ভগরান মে লাগল বহৈত অছি, রএহ এহি বহস্য কেঁ জানি পারৈত ছথি । সমস্ত জীরক ঞশ্বব ভগরান রিষ্ণু তীন্ন লোকক পালনহাব ছথি । ঞা সমস্ত সঁসাব হ্মনকে মে স্থিত অছি আ হ্মনকে সঁ উঁপ্তেন্ন হোযত অছি। রএহ রুদ্র কপ মে জগতক সঁহাব কবৈত ছথিন । পালনক সময হ্মনকা রিষ্ণু কহল জাযত অছি আ সৃষ্টিকাল ব্রঁহ্মা । দোসব লোকপাল সেহো হ্মনকে স্বকপ অছি । ও সরহক আধাব ছথিন মুদা হ্মনকব আধাব কেও নহি অছি । ও ছোটঁ পৈঘ সরসঁ পৃথক ছথিন আ সঁগহি সঁগ সরসঁ রিলক্ষণ সেহো ছথিন । তেঁ সরহক সঁহাবক শ্রীহবিক শবণ মে জাউঁ । রএহ হমব জন্মদাতা ছথি ।হ্মনকে মধুসূদন কহল গেল অছি ।

নাবদজী কহৈত ছথিন - ব্রঁহ্মাজীক কহলা পব সব দেরতা লোকনি সমত লোকক স্বামী সর্ররযাপী দের ভগরান জনার্দনক শবণাগত ভঽ হ্মনকা নমন কেলখিন । তেঁ রিপ্রব ! অহুঁ শ্রীনাবাযণক আবাধনা মে লগি জাউঁ । হ্মনকা সিরা দোসব কেও এহন উঁদাব দেরতা নহি ছথি , জে ভক্তক মাঁগল গেল চীজ দঽ সকথিন । রএহ পুরুষোত্তম মায-রাঁবুঁজী ছথিন । সমস্ত লোকক স্বামী, দেরতাক দেরতা আ জগদিশ্বব সেহো ছথিন । অহাঁ হ্মনকে পবিচর্যা করু । সরদিন আলস্যবহিত ভঽ অগ্নিহোত্র,ভিক্ষা,তপস্যা আ স্বাধ্যায সঁ দেরদেরেশ্বব গুরু কেঁ সঁতুষ্ট কব'ক চাহী । পুরুষোত্তম নাবাযণ কেঁ অহাঁ সব তবহ সঁ অপনাউঁ ।

"ওঁ নমো নাবাণায" মন্ত্র সমস্ত অভিষ্ট অর্থক সিদ্ধি প্রদাতা অছি । হে দ্বিজ শ্রেষ্ঠ ! ব্রাঁহ্মণ চীবরস্ত্র পহিব জঠা র দণ্ড ধাবী আদি উঁপবি চিন্হ ধর্মক কাবণ নহি হোযত অছি । জে ভগরান নাবাযণক শবণ মে জা চুকন ছথি, ও ধ্রুব ,দুবাত্মো র পাপাচাবী বহিতহুঁ পবমপদ প্রাপ্ত কবৈত ছথি । জিনকব সব পাপ দূব ভঽ গেল অছি , এহন রৈষ্ণর পুরুষ কখনহুঁ পাপ কর্ম মে লিপ্ত নহি

হোযত শ্বছি । ও শ্বহিঁসা ভার সঁ শ্বপনা মন কেঁ কাবূঁ মে বাখৈত ছথি শ্বা সমস্ত সঁসাব কেঁ পরিত্র কবৈত শ্বছি ।

ঋত্রবঁন্ধু নাম সঁ বাজা জে সদিখন হিঁসা মে নাগন বহৈত ছনাহ , সেহো ভগরান কেশরক শবণ নহ কহ শ্রীরিষ্ণুক পবমধাম প্রাপ্ত কেননি । মহান ধৈর্যশানী বাজা শ্বম্ববীষ কঠোব তপস্যা কহ ভগরান প্বকষোত্তমক শ্বাবাধনা কহ হ্মনকব সাক্ষাত্কোব কেননি । বাজা নোকনিকক বাজা মিত্রাসন পৈঘ তত্ত্বরেত্তা ছনাহ , সেহো ভগরান হৃষিকেশক শ্বাবাধনা কহ রৈকুণ্ঠধাম প্রাপ্ত কেননি । একব শ্বতিবিঞ কতেকো ব্রঁবহ্মর্ষি নোকনি পবমাত্মো রিষ্ণুক ধ্যান কহ মোক্ষ প্রাপ্ত কেননি ।পূর্রকান মে প্রহ্লাদ সেহো সমস্ত জীরক শ্বাশ্রয হুত শ্রীহবিক সেরন ,পূজন র ধ্যান কবৈত ছনাহ; ভগরান হ্মনকা কতেকো সঁকষ্ট সঁ বক্ষা কেনখিন । পবম ধর্মাত্মো শ্বা তেজস্বী বাজা ভবত শ্রীরিষ্ণু ভগরানক উপাসনা কহ মোক্ষ প্রাপ্ত কেনে ছনাহ ।

ব্রঁবহ্মচাবী,গৃহস্থ,রানপ্রস্থ র সঁন্যাসী কেও ভগরান কেশরক শ্বাবাধনা কহ পবমগতি পারি সকৈত ছথি । কতেকো জন্মক পশ্চাত জিনকা এহন ব্রুঁদ্ধি হোযত ছৈন জে হম ভগরান রিষ্ণুক ভক্তক দাস ছী , ও সর প্বকষার্থক সাধক হোযত শ্বছি শ্বা ও প্বকষ নিঃসঁদেহ শ্রীরিষ্ণুক ধাম জাযত ছথি । কঠোব ব্রতক পানন কবৈত জে প্বকষ ভগরান রিষ্ণু মে শ্বপন মন-প্রাণ নগেনে বহৈত ছথি, হ্মনকা রিষয মে কী কহন জায । তেঁ তত্ত্বক চিন্তন কবহ রানা প্বকষ কেঁ চাহী জে সদি খন নিবন্তব শ্বনন্য চিত্ত সঁ রিশ্বরাপী সনাতন পবমাত্মো নাবাযণক ধ্যান কবৈত বহী ।

ভীষ্ম জী কহৈত ছথিন - ঞা কহি পবোপকাব পবাযণ পবমার্থরেত্তা দেরর্ষি নাবদ ওহি ঠাম শ্বন্তর্ধান ভহ গেনাহ । নাবাযণক শবণাগত ভেন ধর্মাত্মো প্বণ্ডবীক সেহো "ওঁ নমো নাবাযণ" শ্বষ্টাক্ষব মন্ত্রক জাপ কবহ নগনাহ । ও শ্বপনা হৃদয কমন মে শ্বমৃতস্বকপ গোরিন্দক স্থাপনা কহ সদিখন কহৈত বহৈত ছনাহ জে হে রিশ্বাত্মেন ! শ্বহাঁ হমবা পব প্রসন্ন হোউ । দ্বন্দ শ্বা পবিগ্রহ সঁ বহিত ভহ প্বণ্ডবীক শানগ্রাম তীর্থ মে শ্বকেনে কতেকো রবখ নিরাস কেনথি । স্বপ্ন মে সেহো হ্মনকা কেশরক সিরা কিছু নহি দেখৈত ছনাহ । হ্মনকা নীন সেহো প্বকষার্থ সিদ্ধিক রিবোধনী নহি ছন । তপস্যা,ব্রঁবহ্মচর্য র শৌচাচাবক পানন সঁ, জন্ম জন্মান্তবক রিশুদ্ধ সঁস্কাব সঁ শ্বা সর্রনোকসাক্ষী দেরাধিদের শ্রীরিষ্ণুক প্রসাদ সঁ পাপবহিত প্বণ্ডবীক পবম উত্তম রৈষ্ণরী সিদ্ধি প্রাপ্ত কেননি । ও সদিখন হাথ মে শঁখ ,চক্র শ্বা গদাধাবী কমননযন শ্যামসুন্দব পীতাম্ববধাবী ভগরান শ্বচ্যুত কেঁ দেখৈত ছনথিন । মৃগ শ্বা জীর কেঁ হিঁসা কবহ রানা সিঁহ ,রাঁঘ শ্বা দোসব জীর শ্বপন স্বভারিক রিবোধ হাগি হ্মনকা নগ শ্বারৈত ছন । হ্মনকা হৃদয মে এক-দোসবক হিত সাধনক মনোবম ভার ভবি জাযত ছন । ওহি ঠামক জনাশয শ্বা নদিক পানি স্বচ্ছ ভহ গেন ছন । গাছ -বৃক্ষ ফূন শ্বা ফন সঁ নদন বহৈত ছন । দেরদেরেশ্বব ভক্তরত্সেন গোরিন্দক প্রসন্ন ভেনা পব হ্মনকা নেন সমস্ত চবাচব জগত প্রসন্ন ভহ গেন ছন ।

এক দিন প্বণ্ডবীক সোমা মে ভগরান জগন্নাথ প্রকষ্ট ভেনাহ । হাথ মে শঁখ, চক্র শ্বাওব গদা নেনে ছনাহ । তেজমযী শ্বাকৃতি ,কমন সন পৈঘ-পৈঘ শ্বাঁখি ,চঁদ্রমণ্ডন সন কান্তিমান মুখ, কমব মে কবঘনী, কান মে কুণ্ডন,গনা মে হাব,রাঁহি মে রাঁজূরঁন্দ,রক্ষস্থন পব শ্রীরত্সেক ছাপ শ্বা শ্যাম শবীব

পব পীতরস্ত্র শোভাযমান ছুন। রনমালা সঁ সমস্ত শ্বঁগ র‍্যাপ্ত ছুন। মকবাঙ্কত কুণ্ডন জগমগা বহন ছুন। যজ্ঞোপরিত নীচা ধবি নঠকন ছুন। মোতীক মানা হ্মনক শোভা বঁঠা বহন ছুন। দের ,সিদ্ধ, দেরেঁদ্র ,গন্ধর্ব শ্ব মুনি চৌব শ্বাদি সঁ হ্মনক সেরা কহ বহন ছুনাহ।পাপবহিত প্বণ্ডবীক দেরদেরেশ্বব মহাত্মো জনার্দন কেঁ ওহি ঠাম দেখি প্রসন্ন চিত্ত সঁ হ্মনক স্তুতি কবহ নগনাহ।

প্বণ্ডবীক কহননি - সমস্ত জগতক এক মাত্র নেত্র শ্বহাঁ ভগরান রিষ্ণুক নমন শ্বছি। শ্বহাঁ নির্মন. নিহ ,নির্গুণ শ্বা মহাত্মো ছী , শ্বপনেক নমন কবৈত ছী। শ্বহাঁ সর প্রাণীক ঞশ্বব ছী ,ভঞক ভয শ্বা দ্বখ দূব কব'ক নেন গোরিন্দ শ্বা গরুড়ধ্বজ রূপ ধাবণ কবৈত ছী। জীর পব শ্বনুগ্রহ কব'ক নেন কতেকো শ্বাকাব ধাবণ কবনিহাব শ্বপনেক নমন কবৈত ছী। ঞা সমস্ত রিশ্ব শ্বহাঁ মে সমাহিত শ্বছি। শ্বহীঁ ঠাঁ একব উঁপাদান কাবণ ছী। শ্বহীঁ জগতক নির্মাণ কএনহ্মঁ শ্বছি। নাভি সঁ কমন প্রকঠ কবনিহাব ভগরান পদ্মনাভ কেঁ রেঁবি-রেঁবি নমন কবৈত ছী।সমস্ত রেদান্ত মে জিনকব শ্বাম্মেরিহৃতিক শ্ররণ কএন জাযত শ্বছি ,তাহি পবমেশ্বব কেঁ নমন কবৈত ছী। নাবাযণ! শ্বহীঁ সর দেরতাক স্বামী শ্বা জগতক কাবণ ছী। হমবা হৃদয মে নিরাসিত ভগরান শঁখ-চক্র -গদাধব ! হমবা পব প্রসন্ন হোউঁ। সমস্ত প্রাণীক শ্বাদিহৃত , পৃথ্বী কেঁ ধাবণহাবি , কতেকো রূপধাবী শ্বা সরহক উঁতপত্তিক কাবণ শ্রী রিষ্ণুক নমন কবৈত ছী। ব্র্বহ্মা শ্বাদি দেরতা শ্বা স্ববেশ্বব সেহো জিনকব মহিমা নহি জানৈত ছুথিন , জিনকব মহিমা কেঁ তপস্যা সঁ শ্বনুমান কএন জা সকৈত শ্বছি,তাহি পবমাত্মো কেঁ নমন কবৈত ছী। ভগরন! শ্বপনেক মহিমা রাণীক রিষয নহি শ্বছি। শ্বহাঁ জাতি শ্বাদি কল্পনা সঁ দূব ছী। প্বরুষোত্তম ! শ্বহাঁ এক-শ্বদ্বিতীয হোঞতহ্মঁ ভঞ পব হৃপা কব'ক নেন ভেদ রূপ সঁ মৎস্য-কূর্ম শ্বাদি শ্ববতাব ধাবণ কহ দর্শন দৈত ছী।

ভীষ্ম জী কহৈত ছুথিন - এহি প্রকাব জগতক স্বামী রীবরব ভগরান প্বরুষোত্তমক স্তুতি কহ প্বণ্ডবীক হ্মনকা দেখহ নাগনখিন; কিএক তহ চিবকান সঁ হ্মনক দর্শনক নানসা বখনে ছুনথি। ভগরান রিষ্ণু প্বণ্ডবীক সঁ কহনখিন - প্বত্র প্বণ্ডবীক! শ্বহাঁক কন্যাণ হো। হম শ্বহাঁ পব প্রসন্ন ছী। শ্বহাঁক মন মে জে কমনা শ্বছি সে মাঁগ্ব ,হম শ্ববস্য দের।

প্বণ্ডবীক কহনখিন - দেরেশ্বব! হম ছোঁঠ বুঁদ্ধিরানা মানুষ ছী শ্বা শ্বপনেক হমব পবম হিতৈষী ছী। হে মাধর! জাহি মে হমব হিত হোয স শ্বহাঁ হমবা দিশ্ব।

প্বণ্ডবীক কেঁ এনা কহনা পব ভগরান খুশী ভহ কহনখিন - স্বর্র্বত ! শ্বপনেক কন্যাণ হো। শ্বাউঁ , হমবা সঁগ চন্ব শ্বা সদিখন হমবা সঁগ বহ্ম।

ভিষ্ম জী কহৈত ছুথিন - ভঞরস্েন ভগরান শ্রীধব জখন এনা কহনখিন তখন শ্বাকাশী মে দুঁদুভী রাঁজহ নাগন শ্বা শ্বকাশী সঁ ফুনক রঁর্ষা ভেন। ব্র্বহ্মা শ্বাদি দেরতা সাধুরাদ দেনখিন। সিদ্ধ,গন্ধর্ব শ্বা কিন্নব গান কবহ নাগনখিন। দেরদেরেশ্বব প্বণ্ডবীক কেঁ শ্বপনে সঁগ শ্বপন ধাম নহ গেনখিন।

******

२.४.लाल देव कामत-ड्राईंग रूम मे लाफिंग बुद्धा कतेक लाफिंग कतेक थिंकिन? / बिहैन कथा -: वियाह गीतक दियेमान



लाल दवे कामत

ड्राइगं रूम म ेलाफिंग बद्धा कतके लाफिंग कतके थिंकिन? / बिहैन कथा -: वियाह गीतक दियमोन

१

ड्राइगं रूम म ेलाफिंग बद्धा कतके लाफिंग कतके थिंकिन?

मैथिलीक दर्जनमरि प्रख्यात कवि अपन एक-एक गढ़ा काव्य रचना लके ठाढ़ छथि।

सतीश चन्द्र झा केर पहिल कविताक शिर्षक ड्राइंग रूम में लाफिंग बुद्धा के एहेन सीमाग्य भेटलैक जे 48 टा कविता में अपन पैधाउत से मैथिलीक नव कवितावली के स्वयं संज्ञा प्राप्त कयलक अछि। पछिला 2014 वर्ष में साहित्य लोक-बोकारो (झारखंड) से प्रकाशित एडि 112 पृष्ठक मैथिली पोची में तुलानन्द मिश्रा बहुत किए कहि चुकत छथि, संगहि कथा-निबंध महाकाव्य आा गीत संग्रह के 6 टा पोथीक एहि प्रकाशन से विभिन्न रचनाकारक निकलन छैक। एतवे नहि सॉरी अकल नाटक के सेहो प्रकाशन भेलैक जे प्रतिक्रिया के आसाने बाट जोहेत अछि।

आई मातृभाषा वैधिलीक उन्नति लेन प्रयत्नशील अगिता पौद्धीक सेनानीलेल समर्पित केलनि अछि ई पोथी। वरीयता कम में प्रथमतः साहित्यकार अर्धनारीश्वर जीक रचनाके स्थान देल गेल छैक, तकराबाद कविसम छथि। पोथीक कमर आकर्षित करय योग्य छैक, ते समान्यतः पाठक सबसे पहिले पृष्ठ सं० 63 उनटावेत कविताक रहस्य बुझय जेल अपना के नहि रोकि पवताह।

ड्राइंगरूम में लाफिंग बुद्धाक गरज एहिमें छानबीन जॉम पड़ताल आ परीक्षण करबाक भाव देल जाईछ। एहिसें पाठक वर्ग के निर्णय लेवामें आ महत्वपूर्ण बात बुझवा में आओत। समालोचना के समीक्षाक अंग कहल गेल छैक तें सूक्ष्म विश्लेषण आ तर्कपूर्ण विवेचन लोकमंगल भावना से प्रस्तुत कए रहल छी। आ से नैतिकवादी मुल्यक कारणे आर्दशवादक मजमुत बुनियाद होयत। एहिमें सब कवि के मात्र एक-एकटा रचना के प्रतिनिधि कविताक दर्जा भेटिजाई, ताही दृष्टिकोण से द्वेष आ पक्षपातक ध्येय से फराक सब रचनाकार के जुआयल बुजैत छी। किछु गोटाक रचना विभिन्न पत्र-पत्रिका में पहिनहुँ रॉ पढ़ने छी। अन्तर स्नातक स्तर घरि के व्याख्याता पद से सेवानिवृत्त शिक्षक गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर जे दु विषयमें (हिन्दी-

अंग्रजी) स्नातकोत्तर रहितहुँ मातृभाषा मैथली लेल अपन कलम सदा चलबैत रहलाह अछि, हिनक पहिलक्रम के कविता कतिका कुमर मेलाक दर्शन कराने छैक। देवधर्म के साक्षी रखैत कतेको गाम में सय साल से एहन आयोजन होईछ आ कुश्ती दंगल सेहो आयोजित रहैत अछि, जाहिमें खलीफा केर बुता आ दाऊ प्रदर्शनक अवसर भेटैत छैक, परंच से संस्कृतिक जगह पर बीजे० आरकेस्ट्रा आ कैसेट पर पॉपगीत चकमक विजुलीक इंजोत आ कान फारय जोकर ध्वनि विस्तारक यन्त्रक संग एक हैज नर्तकीक नृत्य से कोलाहल लगेछ। अगिला जगह छेकिकए बिराजमान दर्शको बीच-बीच में नृत्य आ सीटी बजबैत पछिला दर्शक के देखबानें बाधा उपस्थित करैत छैक। हो-हल्लाक बीच साटा पर आयल कलाकार टीमकें हरेक नाच पर टाका इनाम देबाक नव धनाढ्य के एक खास प्रतियोगिता बुझाईत छैक। जे शहर से बन्दा उगाही कए आ ठिकेदारी से मेल आमदनी के बकशिश में लुटाबैत छैक। गाममें जापरि लोक बसल रहताह ता ई कतिकाकुमर पूजा होईत रहत। परंच आधुनिक रूप लैत सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपसंस्कृतिक समावेश नहिं होअय ताहि लेल कवि चिन्तित देखेलाड, तें विसर्जन में जे शाही खर्च आ दारू पीवकए जूलूस निकलैत छैक ताही लेल शासन-प्रशासन सेहो फिरीशान रहैत अछि 'मसियाले रहब हे कतिकाकुमर' उत्प्रेरित करय योग्य कविताक श्रेणीमें स्थापित मेल अछि।

दोखी कविता में प्रियतम से भेंट आ वार्ता उपरान्त पुराना जमानाक नुक्का चोरिस दलान परसँ घर जायब आयन के नब पिढ़ी नहि पसिन्न करत। ओकरा में खुलापन दिनोदिन आरों बेसीये मेल जेतैक। कारण स्पष्ट अछि, एहमें संचारक साधन मोबाईल-पेजर टी०वी-कमप्यूटर आ रंगीन सचित्र व्यस्क लेल पत्रिका आ सीनेमाक अडल्ट फिल्मक' योगदान छैक। आ से बियौहति नायिका झटदय अपनबैत छैक ओ इहो कहैत छैक जे पिढीदर पीढ़ी से जे अनुवांशिक गुण आयल छैक, डी एन ए० रिर्पोट बताबैत अछि जे

पहिलुका लोक अपनेलक तँ अखनुका नवलोक कोना परहेज नहत। बादल केर रंग आसमानी पिया हमर चढ़त्त जवानी यौ. गीत से मधुश्रावनीक मधुमय वातावरण बनैत देखल गेल अछि। आब में फुल लोदनिहारि पल-पलक वार्ता पति से फोन पर करैत छैक। आबय वाला दिन में बाप पित्ती जेठमा के समय दम्पति आपसमें फदियाइत से कोनोटा अचरज नहिं। डिनीया मिजेबाक जमाना लदि गेल। सबटा समयक तीब्रता दोष थिकैक। मनुखक खोज कविता नव आयाम दिश डेग बढ़ावैत जे जेहेन से तेहन समुच्य में रहेछ। सेट ब्योरी में क्रिकेट खिलाड़ी के बैइट-बॉल-बिकेट आ कैप-पाइढ संग देखल जाइछ ते कतेको उदाहरण से क्षेत्रीय दल सहित उभयनिष्ट सेट लेल ताकीद कयल गेल अछि, मनुसंतानक बीच लोककल्याण काज लेल पाँचो गोटेक मिलान विशुद्ध मुन्नुख्क सेट पतनुकान लेने अछि। कवि विज्ञान कविता भस्मासुरी सिधान्त में सेहो बहुत किछु गप्प केयने छथि। बस्तुतः भस्मासुर मिथक नहि सिद्धान्त थीक अपने रोपल गाछी होईत छैक भूताहि। पोसा आतंकवादी जहन बात माननाई अनठबैत छैक आ विपरीत काज करैत छैक, विनाशकारी पसाही के मिजहेबाक अत्यन्त चिन्ताक पड़ी रहेछ, जेनाकि अविवेकी भस्मासुर के वरदान देला पर त्रिनेत्र शिवके स्वयं पराई पड़लैक आ भोगय पड़लैक।

संस्कृत में आनर्स कवि मुटकुन झा शिक्षक पेशा में मिथिला से बाहर रहैत छथि, ओत्तय ओ अहर्निस मातृभाषाक सेवा में जुटल रहैत छथि। हिनक रचना समुचित धर्म शिर्षक में देखावटी आ पाखंड पर प्रहार कहैत निरन्तर दिव्य निजकर्म करवाक विचार भाव दरसेलनि अछि। उपदेश तँ दोसरे लेल होईछ। सकुचल आंगन में कवि रहेत छथि जाहि आंगन में बुढ़ नहि, चौरामें तुलसीक गाछ नहिं से छूछून लगैत छैक। संस्कार आ संस्कृति कर दर्शन सेहो केरलनि अछि।

हृदय आंगन में जे अति कुंठित भेल छैक ताहि के इतिहास बुझि नब पीढ़ी मानव परायण के महत्व बुझथि, ताहि लेल अपील कयल गेल अछि। चूप कियैछी राजूयौ कविता में जाति-पातिक सीमा छोड़ि मिथिला मुक्तिक लेल एकता पर वल देलनि संगहि मिथिला राज्य हेतु मुखर भए बाजब-चुप्पी तोड़न वाजीव थीक। गामक मनोव्यथा में कवि गौओं निशेबाज से खास के युवा वर्गक नशापान कारणें सम्य लोक गामसँ पलायन केलाह आ मजबूरी में अशुद्ध वायु श्वांस ल' रहलाह अछि। गाम्य महिमा जानि हकार दै सन लागत। दयाकान्त झाक दीर्घ कविता महाकुमंक दर्शन बस्तुतः कराबैत छैक। लयबद्ध आ गेयात्मक छैक। नीति बचन में मूलबात जे उभरि के आयल अछि से छी बजनिहार प्रथमः अन्तःकरण में स्वयं देखथि। विलोम पथ में कवि मानव के संकुचित भेदभाव दिश सचेत करैत छैक।

शोसयोलॉजी से एम०ए० घरि शिक्षित राजनीतिक कार्यकर्ता राजीव कुमार कंठ अपन कवित्वक प्रसार विभिन्न मंच से सेहो केने छथि। अल्लाह भगवान में खपड़ा छार्दैवाला कारीगर छदू मियाँक संदर्भ बहुत किछु जनेलाह अछि। आब हिन्दू मोसलीम कट्टरता जाहि कारणे बदि रहल अछि जे सामाजिक तानावाना लेल चिन्ताक विषय अछि। गर्मागरम पौपकौर्न अपना परिश्रमक पाई में से किनबाक भौजीक प्रति ई अनुराग मिथिले में मात्र देखाइत छैक। मिथिलाराज में कवि अपन संवेदना प्रकट केलनि अछि। मठाधीश लोकनि साहित्य एकेडमी सभा आदि में अपनैती पर जे जोर लगबैत अछि तै पर करारा प्रहार गेल अछि। कवि बुद्धिनाथ झा युग-युम धावित यात्री में गरीबी अपढ़ पिता आ मैटुअर के हीनभाव से उपर उठि देखेबाक खगौट बतेलनि अछि युग कवि यात्रीजीक प्रति ई अनुपम श्रद्धांजलि अछि। किछु नीति बचन पद गेयात्मक लागल। पूतौहक संग केहेन परिहास, तें डींग हाकयसँ परहेज करबापर जोर देलनि अछि। बदलल समीकरण में पेट फुल्लाक घोषि निश्चये कनि सटकल।

विनय कुमारं मिश्र गीतकार छथि। ओ अपन सरस्वती वन्दना सँ महिमा मंडित तथ्य परसलनि अछि। तीनू गीतक माव

मिथिलाक आचार व्यवहार से परिपूर्ण अछि।

कवि सतीश चन्द्र झाक दोसर रचना अन्हरिया में मगजोगनीक चकमक आ पुतिंगाक उड़ान सँ मन प्रफुल्लित होयब सन्न छैक। शांत चुप्पी के तोड़य लेल हुनका ड्राइंग रूम में लाफिंग बुद्धा आ डोलैत सर्कस करैत गुड़िया से प्रेरणा भए कुराइत रहैत छन्हि, प्रेरणादायी एहि कविता से सम्बल भेटैत छैक। अमन कुमार झा बुधियारीक एहसास..... में बहुत किछ एहसास करौलनि अछि। पत्नीक मुश्कि पर आशंका मेल सन्ता मध्यान्तर में आबि देखू तँ आरो सोलह श्रृंगार सन कविता बनैत रहत। हाथीक आत्मा में कवि इहो कहलनि जे मनुख जाति पाति में बाँटि लहासो जरेबाकाल लीला काकासन लीला ठार करैत छैक। डा0 संतोष कुमार झा मायक चेतौनी के नीकजका रखलनि अछि। पुरान समय से ल' के वर्तमान घरि गर्ल फेण्डक संग सतीत्व पर प्रश्नचिन्ह लगैत छैक। आनो कविता रोचक अछि। विजय शंकर मल्लिक सुधापत्ति के जागिजाऊ हृदयग्राही छैक। टटका सिंगरहार में तुकबंदी धारावाहिकता रस से भरल अछि। सुनील मोहन ठाकुर फगुआक अथाह प्रेम पसारलनि पहुँ से समाद में उलहन दैत मातृभाषा जुनि विसरू नायिकाक मनोभाव दृष्टिगोचर भेल। कुमार मनीष अरविन्द निलहामलिकवाक बहन्ने पंचारण कर गाथा मोन पाड़ने छथि, पाठक के स्वयं सब उपरा उपरि कविता पढ़क अवसर भेटत । ई एकटा नीक संग्रह बनि पड़ल अछि। पोथी मूल्य एक सय टाका छैक।

२

बिहैन कथा: वियाह गीतक दियमोन

एक राति लगनमे पंडिताई करय नागे चौधरी जी गेल रहथि। गामेक बेचू ठाकुर ओतय सेहो जजमैनका खातीर वियाहमे पहुंचे रहय। सब बिध आ भोजन उपरान्त दूनू गोटय संगहि रतिगरे विदा भेला। बीच पांतर बाटमे गीत गायनके चौल पर वार्ता दूनू व्यक्ति के बीच होती रहल। पंडी जी कहलखिन आब गीत - गारि सुनि मन अकक्ष भ' उठैत अछि। से नै तँ अपन ई धंधा छोरि ऐ चुनावी अनघौलमे अपनो सब प्रत्याशी बनि वोटमे ठाढ़ो भ' जाऊं। पंडीजी दियादीमे जेरगर रहने सुरक्षित जीत हुअय ले वार्ड पंचमे आ ठाकुर जी समितिमे उम्मीदवार बनि गेला। से समिति सदस्यमे एघारा रहैत जीतल आ पंचो पद सँ ओ लसकि गेला। फेर हुनका वियाहक विनोदी गीत सोहनगर बुझाए लगलैन- "दाई लवा छिरियाऊ - बाई बिछि बिछी खाऊं....... हमर पंडित अहाँक पंडिताइन कैँ संगहि सुताऊ।। लौउईनिया कैँ चिल्का रँग विरंग भेल- बरवरनाके जनमल भरिघर भेल .... हे गै बहिना।। आ पुश्तैनी काजमे पुनः समरसता लेल दूनू जुटि गेलाह!

-लाल देव कामत मो० ७६३१३९०७६१

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- यथावत



कुमार मनोज कश्यप

लघुकथा- यथावत

चारियेसाल के उमर सऽ ओ कूड़ा बीछऽ लागल रहै .... भरि दिन लोकक घरक आगू, गली-कुची, सड़क कात, कूड़ा-कचड़ा के ढ़ेर मे सऽ काजक चीज जेना बोतल, धातुक टूटल-फूटल सामान, पॉलीथिन आदि बिछि कऽ ओकरा साफ करै आ कबाड़ी हाथे बेचि आबै। भरि दिन मे बड्ड बेसी तऽ पचास-साठि रूपया होई जे ओ अपन माय के साँझ मे सौंपि दई। ओकर पूरा परिवार .... माय, बाप, भाय, बहिन .... सभ एहि खानदानी पेशा मे लागल! ओकर अल्प वयस, जट्टा सन केश, बहैत नाक, मैल सऽ कारी भेल हाथ-मुँह, मैल-किट्ट फाटल वस्त्र आ ठिठुरैत जाड़ मे कूड़ा के ढ़ेर के छिड़िया कऽ किछु ताकैत खोजी आँखि-हाथ .... कोनो विदेशी फोटोग्राफर के लेल एकटा विषय बनि गेलै!

सुनै छियै ओकरा ओहि फोटो लेल अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार सेहो भेटलै। आ जे सब सऽ पैघ बात भेलै से छलै पश्चिमी मीडिया मे भारत मे व्याप्त बाल-श्रम, बाल-अधिकार, अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी आदि विषय पर गर्मागरम बहस

के एक बेर फेर सुनगा देब।

ओ छौंड़ी एहि सभ सs अनभिज्ञ एखनो ओहिना कूड़ा बिछिते छै।

-कुमार मनोज कश्यप सम्प्रति: भारत सरकारक उप-सचिव, संपर्क: सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 # 9810811850
ईमेल: writetokmanoj@gmail.com

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.आचार्य रामानंद मंडल-शुभांगी



आचाय रामानदं मडंल

शभुागंी

रिटायर्ड डीएसपी रंजीत प्रसाद विधुर रहलन। कोनो धिया पुता न रहय।हुनकर एगो दोस्त रहय उमाकांत ।वो हुनकर पुरहित सेहो रहय।दुनू दोस्त खूब शतरंज खेले।कखुंतो डीएसपी साहेब जीत जाय त कखुंतो पुरहित जी।अंतीम जीत पुरहित जीये के होय।

एकटा दिन पुरहित जी डीएसपी साहेब के कहलन -अंहा के लगभग बीस बिघा जमीन हय। पक्का हबेली हय।परंच घरनी बिना सब सुना हय। अंहा विआह न बड़े क लैय छी।

डीएसपी साहेब कहलन -अइ बुढारी मे के अपन बेटी से हमरा से बिआह करतैय।मन त हमरो होइ हय कि कोनो वारिस हो जाय।

पुरहित जी कहलन -हम जोगार लगा देब।परंच अइमे कुछ रुपैया खर्च करे के होयत। लगभग पचीस हजार लागत।

डीएसपी साहेब कहलन -कोनो बात न हय।हम वारिस के लेल रुपैया खर्च करब।

कनिका दिन के बाद पुरहित जी बगल के गांव मे डीएसपी साहेब के एगो स्वजातीय गरीब आदमी मोहन प्रसाद के पचीस वर्षीय लरकी के पता चलल। पुरहित जी मोहन प्रसाद के इंहा गेलन।

मोहन प्रसाद -प्रणाम पुरहित जी।

पुरहित जी -आयुष्मान।

मोहन प्रसाद -अपने कोन काज से अइली हय।

पुरहित जी -ज्ञात भेल हय कि अंहा के बेटी के बिआह रूपैया के अभाव मे न हो रहल हय। अंहा बड चिंतित रहय छी।

मोहन प्रसाद -जी। पुरहित जी।

पुरहित जी -त इ पुरहित कोन काज के।हम एगो लरिका के जनैय छी।लरिका रिटायर्ड डीएसपी हय।वो विधुर छतन। कोनो आल औलाद न हय।जमीन जायदाद के कोनो कमी न हय।वो पड़ोसी गांव के हतन।

मोहन प्रसाद - जी पुरहित जी। डीएसपी साहेब के कोन न जनैत हय।हम अपन बेटी के हुनका से बिआह करे के लेल तैयार छी।परंच हम विपन्न छी।

पुरहित जी -बिआह करे के लेल हम पच्चीस हजार रूपैया देइ छी।

मोहन प्रसाद रुपैया पाके के बजलन -पुरहित जी।बिआह के शुभ लग्न देखल जाव।

पुरहित जी मिथिला पंचांग खोललैन आ पढैत बजलन -अही महिना के एकतीस तारीख के शुभ लगन हय।आब बिआह के सर्वजाम करूं।

मोहन प्रसाद -जी। पुरहित जी।

पुरहित जी बजलन -आबि हम जाइत छी।छेका -छेकी के कोनो बात न। सीधे दिन पर बिबाह होएत।

पुरहित जी डीएसपी साहेब के इंहा अयलन आ सभ बात बतैलन।

एनी मोहन प्रसाद सभ बात अपन पत्नी के बतैलन। पत्नी खुश होइत बोलल -शुभांगी के बड शुभ लक्षण हय।जे ऐते प्रतिष्ठित आ धनी वर मिललय।

शुभांगी सभ बात सुनैत रहय। रिटायर्ड डीएसपी मतलब साठ बरिस के लरिका हय।आंखि से आंसू छलक गेल।परंच माय बाप के विपन्नता के देखैत करेजा के पाथर बना लेलक।

तय दिन पर डीएसपी साहेब आ शुभांगी के बिआह संपन्न भे गेल।दिन बितैत रहय।

शुभांगी आ चालिस वर्षीय पुरहित जी के संबंध भौजाई आ देवर जेका स्थापित भे गेल।परंच बातचीत संबोधन जजमानिन आ पुरहित जी होइत रहे।

बरखे अंदर मे शुभांगी गर्भवती भे गेल।आ दोसर बरख के शुरुआत मे शुभांगी एगो स्वस्थ आ सुंदर लरिका के जन्म देलक।

साल बरख के बाद अचानक हार्ट अटैक से डीएसपी साहेब चल बसलैन।

शुभांगी के उपर दु:ख के पहाड़ गिर गेल। शुभांगी के अइ विपत्ति में सहारा बनलन पुरहित जी।परंच इ सहारा केना प्रेम मे बदल गेल से पता न चलल।प्रेम बासना मे बदल गेल।बासना के खेल चलैत रहल।

आबि शुभांगी के लरिका भानु प्रताप युवा भे गेल। शुभांगी अपन बेटा के छत्रछाया में जीवन व्यतीत करे लागल।

पुरहित जी गांव के महादेव मठ के महंत बन गेलन।

-आचार्य रामानंद मंडल सीतामढ़ी।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पद्य

३.१.प्रणव कुमार झा-आदित्य एला : तिला संक्रान्ति

३.२.राज किशोर मिश्र- पूर्णिमा

३.३.प्रमोद झा 'गोकुल'-उद्घोषण

३.४.जगदानन्द झा 'मनु'-३० टा हाइकू

३.१.प्रणव कुमार झा-आदित्य एला : तिला संक्रान्ति



प्रणव कुमार झा

आदित्य एला : तिला सक्रांन्ति

उदित होइत आ डूबैत अहाँके हम नित्य देखलहु अछि
तपिश पाबि क अहाँक हम अमृत नित्य सेंकलहु अछि।
सुनु आदित्य अहाँके देवता मानलहु सदिखन हमसभ
अहाँके लग आबाए के अछि, ई ज़िद ठानलहु सदिखन हमसभ॥

नदी, सागर, ई पर्वत, वन अहीं आबाद करय छी
धरा पर सृष्टि के, अहीं त जिंदाबाद करय छी।
हमरा बूझल अछि अहाँक तपस्या, त्याग सेहो अहाँक
प्रलय के आगि समेटने अहाँ दिन राति जरय छी।

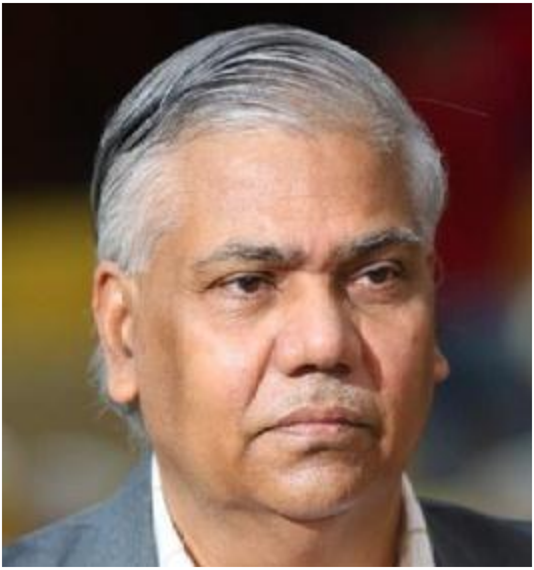
सुनल अछि रुकि गेल छल रथ, सती के शाप से नभ में
बुझिके फल श्री हनुमान जी राखि नेने छलाह मुख में।
रुकल संसार सेहो अहाँ संग, दिवाकर अहाँ कहाबय छी
कोनो टा सभ्यता होय, पूजय अछि सब अहाँके जग में॥

सुनु आदित्य अहाँसे फेर कनिक किछू बात कर के अछि
लगिच आबिकऽ अहाँक अहाँसे भेंट-घांट करऽ के अछि
अहाँके आगिमें लिपटल किछ-एक और राज खोलब हम
हम भारत भू से एलहु अछि, अहाँके बात करबाक अछि।

[प्रणव कुमार झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली]

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.राज किशोर मिश्र- पूर्णिमा



राज किशोर मिश्र

पर्णिमा

प्रतिपदा सँ पूर्णिमा ,
नहु-नहु बढ़ैत चन्द्रमा।

शिशु शशि शिव सिर सोहल,
उगल अकास शतदल सन सोम,
तपत दिवाकर जनु सेराएल,

हिमकर बनि पुनि आओल व्योम।

चाननि सँ पसाहनि कऽ,
चमकि रहल अछि चान,
भऽ रहल अछि आसमान मे,
पूर्णिमा-अनुष्ठान ।

अंबर मे अछि जनु राजतंत्र,
तारासभ चूनल नृपति ,चन्द्र।

भऽ रहल पूर्णमासीक तैयारी,
बढ़ल सुधाकर-सुन्दरता भारी।

गगन बनल अछि रङ्मञ्च,
आयोजन पूरब भर, परञ्च।

चानी सन चाननि सँ सजल,
वसुधा आओर अकास,
दू लोक मे भऽ रहल उत्सव ,
पसरल दिव्य प्रकास।

पूर्णिमा के राति मे ,
केहेन सुदर्शन चान !
सिंगारक सोलह कला सँ शोभित,
चमकल क्षितिज-मचान।

एहेन भव्य रातिक ओहि पार ,
की छै? पसरल घोर अन्हार ।

उजर जोति सँ सुशोभित जखन कुमुदबांधव,
इन्द्रप्रस्थ कैँ छोड़ि विपिन मे भटकैथ पांडव।

अन्हार मे ओँघरा क' किछु दिन पहिने आएल,
तिमिर-देश सँ तारापति छथि भागि पड़ाएल।

नीक जँ होइ छै इजोत, तँ
के छथि ध्वांतक सर्जनकर्ता ?
कोन परोजन छलैक एक्कर ?
रहितै इजोतक खेत परता ।

हँ, जेँ दुक्ख छै ,तेँ कर्म-कोसिस,
नहि तँ अकर्मण्य नर होइत,
विधिक रचना सोचल-विचारल ,
नहि तँ डर हारिक' नहि होइत।

जगत् अमावस्या सन अछि ,
हेरय पड़ैछ पूर्णिमा ,
चानक रही धेने पछोड़ ,
पसरत इजोतक गरिमा ।

गहनक बाद उग्रास, तहन
पोखरि-इनार मे इंदु-प्रतिबिम्ब,

तमिस्त्राक वर्चस्व जतय,
सुरक्षित रहय इजोतक डिम्ब ।

खैर,फेर अलोपित होएत नभ सँ,
पुनिमा के सुंदर चान,
तैँ , विधु तिमिर मे जीबा कैँ,
क' रहलाह अछि ओरिआन।

गुम-सुम भेल चन्द्रमा ,
कात-करओटे छथि पड़ाइत,
अन्हारक शासन मे हिनक
इजोत क्रमश: घटल जाइत ।

ओ ताकथु बाट शुक्ल-पक्षक ,
तैओ त' हुनकर तिथि निजगुत,
मनुक्ख-जिनगी मे धवल-पक्ष,
ओहो अनिश्चित,अछि अजगुत !

पुनिम-अमावस-चक्र मे ,
फँसल रहैत छथि चान ,
विधाता एहने रचल सृष्टि,
की करताह श्री मान् ?

सुख-वैभव नहि रहैछ थिर,
एहने बनल विधान ,
नहि भड़की दु:ख देखि कऽ,

सुख-दुख बूझि समान।

सृष्टिक जेहेन व्यवस्था,
ओहि मे जीबऽ पड़तै,
अभिलाषा के अहंकार,
ओकरा लीबऽ पड़तै ।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.प्रमोद झा 'गोकुल'-उद्घोषण



प्रमोद झा 'गोकुल'

उद्घोषण

बाजव सुकर
करब दुस्कर
लड़ैब बटेर
मारब तीतर
गप्पक तोप
सत्यक लोप
माथ पर टोप
हम छी पोप
के कखन उड़ब
के कतय धसब
कखन के खसब

जँ नै सहचेतब

सब स्वतन्त्र

मूहँक तन्त्र

नै लोक तन्त्र

सौंसे षरयन्त्र

शकुनिक पासा

कौरवक तमासा

पाण्डवक हतासा

मूक भीष्मक आशा

एक नै सहस्र

द्रौपदी अजस्र

करय निवस्त्र

दुशासन निडर

भूख ज्वाल

श्रमिक बेहाल

बैमान नेहाल

बेताल ताल

नेताक धमाल

मर्राइछ काल

नेनाक लोहछन

दूध दूध क्रन्दन

क्यो नै एहन

सदय सज्जन

अधर पर तैखन

कय देतै लेपन

पिठारोक तत्क्षण
यैह स्वेतक्रांति उद्घोषण !

- प्रमोद झा 'गोकुल', दीप, मधुवनी (विहार) फोन-9871779851

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.४.जगदानन्द झा 'मनु'-३० टा हाइकू



जगदानन्द झा 'मन'ु

तीसटा हाइकु

१

रामशरण

राम शरण आबि

रामक भेला

२

काया आ माया

धरतीपर चाही

सबकियोके

३

बहुते नेता

जीतबसँ पहिने

चोर छलाह

४

आजुक नेता

बड़का डाकू भेला

जीतला बाद

५

गामक नेता

बिन पेंदीकेँ लोटा

काजक नहि

६

बौहक नाम

मोछपर द ताव

भोट मांगैत

७

ताड़ी बेच क

चमड़ी चमका क

नेता बनला

८

सुपक भांटा

दलबदलू नेता

एक्के रंगकेँ

९

दूर नेतासँ

नहि जनि कखन

पलैट जेए

१०

हारल नेता

आ छोरल कनियाँ

बड्ड घिनाबै

११

प्रेत देखलों

नहि तँ कोनो नेता

देख लिअ ने

१२

गिरगिटकेँ

रंग बदलनाइ

के सिखेलक

१३

राजनीतिसँ

हम सिखलहुँ की

गूँह गिजब

१४

कपट मोने

समाजमे सम्मान

उपकार नै

१५

अप्पन लेल

नियम बदलै छै

आन चूल्हामे

१६

मुँहक जोड़

धनक बलजोर

राज करै छै

१७

उज्जर नहि

कोयला दलालीमे

कारी होएब

१८

मुर्गा सस्ता

धर्म बचत कोना

साग महग

१८

नै अरजब

गरीब कहायब

हम्मर मोन

२०

गामक भोज

जन्म मरनपर

जीवन भरि

२१

बापकेँ साग

सासुरमे पापाजी

चलन नीक

२२

मोनक सीमा

खत्तम नहि हेतै

जा धरि जीव

२३

बारीमे साग

दुरापर पाहुन

चाहै छै माछ

२४

चुप्पी नीक छै

तहन हल्ला किए

सब जनै छै

२५

परिवारमे

खटपट किएक

नाम खातिर

२६

हम खुश छी

तेँ एखन कतेको

बड़ दुखि छै

२७

मायक शौख

पिता केर सपना

जगिते खत्म

२८

कनियाँ बुझे

एतेक विद्वान के

एहि जगमे

२९

प्रेम आखर

दुखे बहैत नोर

कियो पढ़त

३०

जीतसँ नीक

प्रेममे हारब छै

के बुझलक

- जगदानन्द झा 'मनु', मोबाइल नंबर ९२१२ ४६ १००६

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

